بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 18 अक्तूबर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

मस्जिद फ़ज़ल लंदन की आधार शिला पर एक शताब्दी पूरी होने के हवाले से मस्जिद फ़ज़ल के इतिहास का संक्षिप्त बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 18.10.24

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- कल यू.के. की जमाअत मस्जिद फ़ज़्ल के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में एक आयोजन कर रही है जिसमें ग़ैर मुस्लिम मेहमान, पड़ौसी इत्यादि भी आमन्त्रित किए गए हैं। मस्जिद फ़ज़ल का एक ऐतिहासिक महत्त्व है, इस दृष्टि से कि यह अहमदिया जमाअत की पहली मस्जिद है जो इसाईयत के गढ़ में बनाई गइ थी और फिर यहाँ से इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तथा तबलीग़ लोगों में विराट स्तर पर आरम्भ हुई।

आज हमारे विरोधी कहते हैं कि अहमदिया जमाअत अंग्रेज़ों का अपना लगाया हुआ पौधा है, परन्तु आश्चर्य है कि आज स्वयं उनके लगाए हुए इस पौधे के द्वारा इन पश्चिम में रहने वाले लोगों की कमज़ोरियाँ उनके ही देश में प्रदर्शित करके इस्लाम के सौन्द्रय की तबलीग़ की जा रही है।

मस्जिद फ़ज़ल के निर्माण से पहले वोकिंग में एक मस्जिद बनाई गई थी और उसको बनाने वाले विख्यात पश्चिमी लेखक जो कि ऐशिया की भाषाओं से भली भांति परिचित एंव निपुण विद्वान, जी.डब्लू. लाईट्ज़ थे जो लाहौर में ओरेन्टियल कॉलिज के प्रिंसिपल के पद से रिटायर हुए तथा इंगलिस्तान वापस

आकर 1889 में उन्होंने इस मस्जिद का निर्माण करवाया। यह भी अद्‌भुत संयोग है कि यह 1889 वही साल है जब अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थाना हुई थी। 1889 में ही इन प्रोफ़ैसर साहब की मृत्यु हो गई तथा यूँ यह मस्जिद भी ताला लगने से बन्द हो गई। इस मस्जिद को संभालने वाला कोई नहो था, फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के ज़माने में ख़्वाजा कमालुद्‌दीन साहब यहाँ आए, उन्होंने इसको खुलवाने की कोशिश की तथा वे सफल हो गए। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. को लिखा कि अब इस मस्जिद का एक ट्रस्ट बनाया गया है जिसका निगरान मुझे बनाया गया है और फिर दोबारा इसमें इबादत शुरु हुई। जब यह मस्जिद खोली गई तो ख़्वाजा साहब के साथ हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ी. भी उनके साथ वहाँ गए और नफ़लें अदा कीं तथा ख़ूब दुआएँ कीं।

उसके कुछ समय पश्चात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने मुबल्लिग़ों को प्रेरित किया तथा फ़ंड कम होने के बावजूद चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. को यहाँ भिजवाया गया। उन्होंने ख़्वाजा साहब के साथ यहाँ काम किया। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के निधन के पश्चात ख़्वाजा साहब ने ख़िलाफ़ते सानियः (दूसरी ख़िलाफ़त) की बैअत नहीं की, चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. उन्हें छोड़ कर दूसरी जगह चले गए। यह वोकिंग की मस्जिद थी, किन्तु यथावत् रूप से मुस्लिम सम्प्रदाय अथवा जमाअत की ओर से मस्जिद फ़ज़ल ही है जो बनाई गई। निःसन्देह आज इंगलिस्तान में भी, लंदन में भी तथा पश्चिमी देशों में भी मुसलमानों की अनेक मस्जिदें हैं परन्तु लंदन में मुसलमानों की पहली मस्जिद होने का सम्मान मस्जिद फ़ज़ल को ही प्राप्त है।

अहमदिया जमाअत की यह ख़ूबी है कि उसकी मस्जिदें जमाअत के लोगों के चन्दों तथा क़ुर्बानियों से निर्मित होती हैं। अब तो इंगलिस्तान में भी जमाअत की दर्जनों मस्जिदें बन चुकी हैं। अतएव आज मस्जिद फ़ज़ल के हवाले से मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पश्चिम में इस्लाम के फैलने के बारे में बहुत कुछ बयान फ़रमाया है, यही चीज़ हमारी तबलीग़ी गतिविधियों का आधार है। एक स्थान पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि पश्चिम की ओर से सय का उदय होना यह अर्थ रखता है कि ये पश्चिमी देश जो पुराने ज़माने से अंधकार एवं आध्यात्मिक शिक्षा से वंचित हैं, सत्य के सूर्य से प्रकाशित किए जाएँगे।

अपना एक सपना बयान करते हुए आप अलै. ने फ़रमाया- मैंने देखा कि लंदन नगर में एक मिम्बर पर खड़ा हूँ तथा अंग्रेज़ी भाषा में तथा अत्यंत तर्कपूर्ण शैली में इस्लाम की सत्यता प्रकट कर रहा हूँ, बाद इसके मैंने बहुत से पक्षी पकड़े जो छोटे छोटे वृक्षों पर बैठे हुए थे तथा उनके रंग सफ़ेद थे, सो मैंने उसका स्वप्नफल यह निकाला कि यद्यपि मैं नहीं, किन्तु मेरे लेख इनमें फैल जाएँगे तथा अनेक सत्यनिष्ठ अंग्रज़ सत्य का शिकार हो जाएँगे।

चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. इंगलिस्तान के पहले यथावत् मुबल्लिग़ थे। उन्हें अल्लाह तआला ने यहाँ पहला फल भी प्रदान किया, तथा पहले अहमदी मिस्टर कोर्यो थे जो एक पत्रकार

थे। उनके बाद लगभग एक दर्जन लोग अहमदिया जमाअत में दाख़िल हुए, फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने सियाल साहब को वापस बुला लिया तथा क़ाज़ी अब्दुल्लाह साहब रज़ी. को मुबल्लिग़ बनाकर भिजवाया गया। ये सहाबी भी थे और इन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में यहाँ काम किया। इनके ज़माने में एक किराए का मकान भी लिया गया। 1917 से जनवरी 1920 तक हज़रत मुफ़ती मुहम्मद सादिक़ रज़ी. ने भी यहाँ मुबल्लिग़ के रूप में काम किया। 1919 में चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. को पुनः तथा अब्दुर्रहीम नय्यर साहब रज़ी. को मुबल्लिग़ के रूप में यहाँ भिजवाया गया, उन्होंने निःस्वार्थ भावना से काम किया। 1920 में फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इरशाद फ़रमाया कि इंगलिस्तान में कोई जगह ख़रीदें जहाँ मस्जिद बनाई जाए। अतः दो हज़ार दो सौ पाउंड से अधिक धन राशि से यह जगह पटनी के इलाक़े में ख़रीदी गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को जब यह सूचना मिली तो आप रज़ी. उस समय डलहौज़ी में थे। आप रज़ी. ने वहाँ एक बड़ा आयोजन किया तथा मस्जिद का नाम मस्जिद फ़ज़ल रखा। फिर इस मस्जिद के निर्माण के लिए चन्दे की तहरीक की गई। 1924 में वैम्बले की अंतर्राष्ट्रोय प्रदर्शनी के लिए अब्दुर्रहीम नय्यर साहब रज़ी. को इस्लाम की शिक्षा बयान करने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने क़ादियान को सूचना दी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इसको स्वीकार करते हुए इस्लाम की ख़ूबियाँ बयान करने के लिए एक किताब लिखी जो ''अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम'' के नाम स प्रकाशित हुई है।

इस कान्फ्रंस के लिए फ़ैसला हुआ कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. स्वयं इसमें शामिल हों। अतएव हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. दमिश्क़ तथा मिसर होते हुए, इटली, स्वीज़र लैंड तथा फ्रांस से होते हुए 22 अगस्त 1924 को इंगलिस्तान पहुंचे। यहाँ सेन्टपाल चर्च के सामने खड़े होकर आप रज़ी. ने अल्लाह तआला से इस्लाम की फ़तह की दुआ की और फिर आप रज़ी. नगर में दाख़िल हुए। आप रज़ी. के आगमन को यहाँ की प्रस में विभिन्न कारणों से अत्यधिक कवरेज भी मिली।

मस्जिद के निर्माण के बारे में सबसे पहला चरण रुपए एकत्र करने का काम था। वह इस प्रकार हुआ कि युद्ध समाप्त होने के बाद एक ऐसा ज़माना आया कि पाउंड का स्तर गिरना शुरु हुआ तथा इस अवसर पर 1920 में हुज़ूर रज़ी. के इरशाद पर पहले तीस हज़ार तथा उसके पश्चात एक लाख रुपए जमा करने की तहरीक की गई। जमाअत के लोगों ने इस तहरीक पर पूर्णतः लब्बैक कहा। बैंक ऑफ़ इंडिया के द्वारा यह धन राशि इंगलिस्तान भिजवाई गई तथा इस धन राशि से तीन हज़ार चार सौ अड़सठ पाउंडज़ ख़रीदे गए।

19 अक्तूबर 1924 इतवार के दिन इस मस्जिद की आधार शिला रखी गई। इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए पार्लिमान के मेम्बर, लीडर्ज़, राजनेता, दूतावास के कार्य-कर्ताओं सहित अनेक लोगों को निमन्त्रण पत्र भेजे गए थे, समय कम था इस लिए लगता था कि थोड़े से लोग आएँगे, परन्तु मेहमानों की बड़ी संख्या इस समारोह में शामिल हुई। विभिन्न देशों के लोग भी इस आयोजन में शामिल हुए तथा यह आयोजन अत्यंत सफल रहा। आधार शिला रखने के आयोजन के शुरु में हज़रत हाफ़िज़

रोशन अली साहब रज़ी. ने तिलावत की। इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. ने सम्बोधन फ़रमाया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम के आदेश तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल से साबित है कि इस्लाम की मस्जिदों का द्वार हर उस व्यक्ति के लिए खुला है जो ख़ुदा तआला की इबादत करना चाहे तथा इस्लाम की मस्जिदें विभिन्न धर्मों के लोगों को संयुक्त करने का केन्द्र बिन्दु हैं। इन्हीं भावनाओं के साथ हम अर्थात अहमदिया जमाअत ने इस मस्जिद के निर्माण का निश्चय किया है। फ़रमाया- इससे पहले कि मैं इस मस्जिद की आधार शिला रखूँ, मैं इस बात की घोषणा करना चाहता हूँ कि मस्जिद केवल तथा केवल ख़ुदा तआला की इबादत के लिए बनाई जाती है।

मस्जिद की आधार शिला रखे जाने के दो साल बाद इस मस्जिद का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन करने शहज़ादा फैसल ने आना था उनके पिता जी ने उन्हें कहा था कि वे जाएँ, किन्तु मुसलमानों की प्रतिक्रिया के कारण बादशाह ने उनको रोक दिया और शेख़ अब्दुल क़ादिर साहब ने इसका उद्घाटन किया तथा उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया कि मैं अहमदी नहीं हूँ, किन्तु चूँकि हम इस्लाम की सेवा करना चाहते हैं इसलिए हमें मतभेद से ऊपर उठ कर एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। यह शेख़ अब्दुल क़ादिर साहब का साहस एवं खुला दिल था, अल्लाह तआला इसका भी उन्हें अच्छा बदला अता फ़रमाए।

यह मस्जिद फ़ज़ल का संक्षिप्त इतिहास है जो मैंने बयान किया है और यही इस मस्जिद के निर्माण का कारण था कि पश्चिम में इस्लाम की तबलीग़ हो।

आज हम सौ साल पूरे होने पर समारोह का आयोजन कर रहे हैं किन्तु यह कोई सांसारिक समारोह नहीं है। मस्जिद वह स्थान है जहाँ अल्लाह तआला की इबादत के लिए लोग जमा हों, अपनी रूहानी उन्नति भी करें, अपने नैतिक आचरण भी बलन्द करें।

आज हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने वाले बनें, अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलने वाले हों, उसके प्राणियों का हक़ अदा करने वाले बनें। यदि ऐसा होगा तो तब ही हम इस दुनिया को अमन व सलामती का गहवारा बनाने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131